

# नारद पुराण



नारद पुराण विष्णु भक्ति के महात्मय को प्रतिपादित करने वाला एक वैष्णव पुराण है। इसके श्रवण करने से समस्त पापों का प्रक्षालन हो जाता है। इस पुराण में 25000 श्लोक हैं जो दो भागों में बँटा हुआ है। पूर्व भाग एवं उत्तर भाग। पूर्व भाग में नारद जी श्रोता के रूप में प्रतिष्ठित हैं तथा सनक सनन्दन सनत कुमार और सनातन इसके वक्ता हैं।

उत्तर भाग के वक्ता महर्षि वशिष्ठ जी तथा श्रोता मान्धाता जी हैं। नारद पुराण भगवान विष्णु जी की भक्ति से ओत-प्रोत है। नारद जी ब्रह्मा जी के मानस पुत्र हैं। नारद जी नारायण का जाप करते हुये एवं नारायण की महिमा बताते हुये सर्वत्र विचरण करते रहते हैं। भगवान की भक्ति भगवान के स्वरूप को प्राप्त कराने वाली होती है। इसलिये मनुष्य को नारद जी की तरह हर समय भगवान नारायण का स्मरण करना चाहिये। भगवान नाम चर्चा से ही इस संसार से मुक्ति हो सकती है।

भक्ति भगवतः पुंसा भगवद्रूपकारिणी।  
तांलब्धा चपरं लाभं को वांछति बिनापशुं।।  
भगवद्विमुखा ये तु नरा संसारिणो द्विजाः।  
तेषां मुक्तिभवाटब्धा नास्ति सत्संग मंतराः ॥ (नारद पुराण)

देवर्षि नारद जी ब्रह्मा जी के कंठ से उत्पन्न माने गये हैं। ब्रह्मा जी ने उन्हें कहा, “बेटा, विवाह करो और सृष्टि का विस्तार करो।” लेकिन नारद जी ने पिता ब्रह्मा जी की बात नहीं मानी, कहने लगे, “पिताजी, मैं विवाह नहीं करूँगा। मैं केवल भगवान पुरुषोत्तम की भक्ति करना चाहता हूँ और जो भगवान को छोड़कर विषयों एवं भोगों में मन लगाये उससे अधिक मूर्ख कौन होगा! विषय तो स्वप्न के समान नश्वर, तुच्छ एवं विनाशकारी हैं।”

आदेश न मानने पर ब्रह्मा जी ने रोष में आकर नारदजी को श्राप दे दिया एवं कहा कि “तुमने मेरी आज्ञा नहीं मानी, इसलिये तुम्हारा समस्त ज्ञान नष्ट हो जायेगा और तुम गन्धर्व योनी को प्राप्त कर कामिनीयों के वशीभूत हो जाओगे।” नारदजी ने कहा, “पिताजी, आपने यह क्या किया? अपने

तपस्वी पुत्र को श्राप दे दिया? लेकिन एक कष्टा जरूर करना जिस-जिस योनि में मेरा जन्म हो, भगवान भक्ति मुझे कभी न छोड़े एवं मुझे पूर्व जन्मों का स्मरण रहे। और हाँ, आपने मुझे बिना किसी अपराध के श्राप दिया है, अतः मैं भी तुम्हें श्राप देता हूँ कि तीन कल्पों तक लोक में तुम्हारी पूजा नहीं होगी। आपके मंत्र-स्त्रोत कवच सभी लोप हो जायेंगे।”

ब्रह्मा जी के श्राप से नारद जी को गन्धर्व योनि में जन्म लेना पड़ा तथा दो योनियों में जन्म लेने के पश्चात् उन्हें परब्रह्मज्ञानी नारद स्वरूप प्राप्त हुआ।

गायन्न् माद्यन्निदं तंत्र्या रमयत्यातुरं जगत्।

अहो! देवर्षि नारद धन्य हैं क्योंकि ये भगवान की कीर्ति को अपनी वीणा पर गाकर स्वयं तो आनन्दमयी रहते हैं साथ ही दुःखों से संतप्त जगत को भी आनन्दित करते रहते हैं। नारद पुराण में सदाचार, महिमा, एकादशी व्रत तथा गंगा उत्पत्ति महात्मय, वर्णाश्रम धर्म, पंच महापातक, प्रायश्चित्त कर्म, पूजन विधि, गायत्री मंत्र जाप विधि, तीर्थ स्थानों का महत्व, दान महात्मय आदि पर विशिष्ट चर्चा की गयी है।

### **नारद पुराण सुनने का फल:-**

नारद पुराण सुनने से जीव के सारे पाप क्षय हो जाते हैं, धर्म की वृद्धि होती है। मनुष्य ज्ञानी होकर इस संसार में पुर्नजन्म नहीं लेता। नारद पुराण कथा करने एवं सुनने से नारायण की निश्चल भक्ति प्राप्त होती है। नारदोदेव दर्शनः। अर्थात् जिन्हें नारद जी के दर्शन हो जायें उसे नारायण के दर्शन अवश्य होते हैं।

### **नारद पुराण करवाने का मुहूर्त:-**

नारद पुराण कथा करवाने के लिये सर्वप्रथम विद्वान् ब्राह्मणों से उत्तम मुहूर्त निकलवाना चाहिये। नारद पुराण के लिये श्रावण-भाद्रपद, आश्विन, अगहन, माघ, फाल्गुन, बैशाख और ज्येष्ठ मास

विशेष शुभ हैं। लेकिन विद्वानों के अनुसार जिस दिन नारद पुराण कथा प्रारम्भ कर दें, वही शुभ मुहूर्त है।

### नारद पुराण का आयोजन कहाँ करें?:-

नारद पुराण करवाने के लिये स्थान अत्यधिक पवित्र होना चाहिये। जन्म भूमि में नारद पुराण करवाने का विशेष महत्व बताया गया है - जननी जन्मभूमिश्चः स्वर्गादपि गरियशी - इसके अतिरिक्त हम तीर्थों में भी नारद पुराण का आयोजन कर विशेष फल प्राप्त कर सकते हैं। फिर भी जहाँ मन को सन्तोष पहुँचे, उसी स्थान पर कथा करने से शुभ फल की प्राप्ति होती है।

### नारद पुराण करने के नियम:-



नारद पुराण का वक्ता विद्वान ब्राह्मण होना चाहिये। उसे शास्त्रों एवं वेदों का सम्यक् ज्ञान होना चाहिये। नारद पुराण में सभी ब्राह्मण सदाचारी हों और सुन्दर आचरण वाले हों। वो सन्ध्या बन्धन एवं प्रतिदिन गायत्री जाप करते हों। ब्राह्मण एवं यजमान दोनों ही सात दिनों तक उपवास रखें। केवल एक समय ही भोजन करें। भोजन शुद्ध शाकाहारी होना चाहिये। स्वास्थ्य ठीक न हो तो भोजन कर सकते हैं।

महर्षि नारद जी भगवान विष्णु के परम भक्त रहे हैं। ब्रह्माजी के 17 मानस पुत्रों में से एक नारद मुनि को ज्ञान और बुद्धि के कारण सभी देवता, असुर और ऋषि इनका सम्मान करते थे। अपने ज्ञान के बल पर उन्होंने एक पुराण की रचना की, जिसे आज नारद पुराण के नाम से जाना जाता है। इस पुराण में उन्होंने बताया है कि कलियुग आने पर पाप इतना बढ़ जाएगा कि इस पृथ्वी का संतुलन खराब हो जाएगा। इंसान, इंसान का ही दुश्मन होने लग जाएगा और वह दूसरों के साथ तो क्या बल्कि अपने के साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार करेगा।

### **नारद पुराण के अनुसार जानें, कलियुग आने पर क्या होगा ?**

कलियुग आने पर श्रेष्ठ और ईमानदार मनुष्य का लोग उपहास करेंगे और उनमें दोष निकाला जाएगा। धर्म की बजाए लोग अधर्म को बढ़ावा देंगे। लोग अपने धर्म के प्रति शून्य हो जाएंगे।

घोर कलियुग के आने पर लोग अपनों का तो क्या बल्कि अपने गुरुओं का भी सम्मान नहीं करेंगे। पैसा कमाने के लिए लोग किसी भी हद तक जाएंगे। आम लोगों के बीच शिक्षा और सदाचार का महत्व कम हो जाएगा।

नारद पुराण के अनुसार कलियुग में कृषि का नाश होगा और किसीन दिन-रात दुखी होंगे। प्रकृति के साथ लगातार छेड़छाड़ होने पर अनाज का अंत हो जाएगा। लोग कृषि छोड़कर अन्य साधनों से की ओर पलायन करेंगे, लेकिन फिर भी उनके हाथ कुछ नहीं लगेगा।

कलियुग में लोग बिना स्नान-शौच किए ही सुबह-सुबह बिना प्रभु का नाम लिए, पूजा-पाठ किए बिना ही भोजन करेंगे। लोगों को केवल अपना पेट भरने से मतलब रहेगा और इसके साथ ही वेज को छोड़ लोग मास-मछली का सेवन अधिक करेंगे।

मनुष्य साधुओं तथा ब्राह्मणों की निंदा में तत्पर रहेंगे। मनुष्यों में पाखंड की प्रचुरता और अधर्म की वृद्धि हो जाने से आयु कम हो जाएगी।

कलियुग में पाप लगातार बढ़ता जाएगा। अनुचित कार्य करने में लोगों को लाज और भय नहीं होगा। लोग व्यर्थ के वाद-विवाद में फंसकर धर्म का आचरण छोड़ बैठेंगे। लोगों का धर्म से विश्वास उठ जाएगा।

महिलाएं बेहद कड़वा बोलने लगेंगी और उनके चरित्र में नकारात्मकता घर चुकी होगी। महिलाओं के ऊपर न तो पिता का और न ही पति का जोर होगा। औरतें अपने मन की करेंगी वह किसी की नहीं सुनेगी।

### नारद पुराण का महत्त्व :



नारद पुराण परम पुनीत सर्व कष्ट निवारक,सर्व सुख प्रदाता पुराण है। इस परम पुनीत पुराण में प्रवृत्ति और निवृत्ति का सार गर्भित एवं विस्तृत विवेचन किया गया है वैसा अन्य जगह मिलना दुर्लभ है।

यह पुराण नैमिषारण्य में एक बहुत बड़े सम्मेलन से शुरू हुआ है। इस सम्मेलन में मुख्यतः चार विषयों पर गम्भीर विचार हुआ जैसे पृथ्वी पर कौन-कौन-से क्षेत्र पवित्र हैं। विष्णु के चरणों में अनन्य भक्ति पाने का सरल उपाय,आदि। महर्षि शोनक ने सुझाया महाराज सूतजी सर्वश्रेष्ठ पौराणिक प्रवक्ता हैं।

इसलिए समस्या का समाधान सूतजी ही कर सकते हैं। सूतजी ने बड़ी शान्ति से जिज्ञासाओं की प्रश्नावली सुनकर इन सभी शंकाओं का निराकरण करने के लिए नारद पुराण को सुनाया। यह पुराण सभी पापों को नाश करने वाला है। दुःस्वप्न की चिन्ता का निवारण करने वाला है।

- धर्म
- अर्थ
- काम
- मोक्ष का हेतुरूप है।

यह पुराण परम गोपनीय है साथ ही यह केवल श्रद्धालु एवं निष्ठावान भक्तों के लिए ही प्रयोग योग्य है। इसका वाचन किसी पवित्र स्थान पर होना चाहिए। यह मूल रूप से वैष्णव प्रकृति व प्रवृत्ति का पुराण है। इसे दो खण्डों में विभाजित किया है। प्रथम खंड के शुरुआत में इसमें ब्रह्माजी के चार मानव पुत्र सनक, सनंदन, सनातन, तथा सनत्कुमार की कथा है। जिसमें उन्होंने नारद जी से कुछ शंकाओं का निवारण करने के लिए प्रार्थना की। इसके बाद उन्होंने मार्कण्डेय की कथा सुनाई। तीर्थ गंगा के महत्त्व व पूजन को बताया गया है।

उसके आगे सूर्यवंशी राजा वृक के बाहु की कथा है। जिसमें आगे जाकर कपिल मुनि द्वारा सगर पुत्रों को भस्म करने की तथा अंशुमान को गंगा को नीचे उतारकर उनके उद्धार तक की कथा है। आगे गुरु का स्वरूप बतलाते हुए ब्रह्मराक्षस ने बारह प्रकार के गुरुओं का उल्लेख किया है। आगे सनक मुनि द्वारा भगवान् विष्णु के वामन रूप में देवताओं के संकट दूर करने और बलि के अहंकार को नष्ट करने की कथा कही गई है।

इसमें अन्नदान, विद्यादान से प्राप्त होने वाले लोगों के बारे में बताया है। बुद्धिमान् व्यक्ति के द्वारा पांच प्रकार के श्राद्ध को बताया है, परस्त्रीगामियों, विश्वासघात करने वालों, मंदिर में अथवा सरोवर में मल त्याग करने, वेद और चंदनादि आदि गलत कार्य करने वालों को किस तरह का नरक भुगतना

पड़ता है का सविस्तार वर्णन आगे सनक मुनि ने नारदजी की जिज्ञासाओं को संतुष्ट करते हुए उनसे सत्कर्मों का उल्लेख किया है।

द्वितीय खंड में समस्त तपों, व्रतों धर्मानुष्ठानों एवं दान आदि के निष्पादन की विधियां हैं, नियत काल है एवं तिथियां हैं। इसके अन्तर्गत गौ वध होने पर प्रायश्चित, चोरी में प्रायश्चित, आनजाने में मां बहन से यौन संसर्ग करने पर प्रायश्चित के तरीके बताए गए हैं। आगे विष्णु मंदिर का निर्माण कराया। साथ ही इसमें बताया है ब्रह्माजी का एक दिन होता है एक में चौदह मनु, चौदह इंद्र और चौदह ही प्रकार के भिन्न-भिन्न देवता होते हैं।

इसकी तालिका दी गई है। सत्ययुग से लेकर कलियुग के बारे में बताया गया है। अंत में वेद के अंगों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। जिसमें शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दों का वर्णन है। अतः इसे पुराण का श्रवण और श्री नारायण में श्रद्धापूर्वक अनुरक्ति से मनुष्य अपने जीवन का सफल काम करता हुआ मुक्ति का अधिकारी हो जाता है। श्री नारद पुराण श्रेष्ठ है इसका पठन एवं श्रवण उपकारी है। अंततः यह कहेंगे इस पुराण में गोपनीय अनुष्ठान, धर्मनिरूपण तथा भक्ति महत्त्वपरक विलक्षण कथाएं आदि का अलौकिक महत्त्वपूर्ण व्याख्यान प्राप्त होता है।

एक बार नैमिषारण्य में एक बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में बड़े-बड़े तपस्वी, तत्त्वज्ञानी और स्वाध्याय प्रेमी ऋषि मुनि पधारे। इस सम्मेलन में मुख्यतः इन चार विषयों पर गम्भीर विचार हुआ।

1. इस पृथ्वी पर कौन-कौन से क्षेत्र पवित्र हैं और तीर्थ स्थान हैं जहां वास करने से मनुष्य का कल्याण हो सकता है ?
2. इस संसार में आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक तापों से दुःखी मनुष्यों की मुक्ति का सरल उपाय क्या हो सकता है ?
3. विष्णु के चरणों में अनन्य भक्ति पाने का सरल उपाय क्या है?



4. दैनिक धर्म कर्म करते हुए मनुष्य अपने दायित्व का पालन करते हुए किस तरह अपना अभीष्ट पूर्ण कर सकता है।

सभी महर्षियों एवं मुनियों ने अपने-अपने विचार रखे। सभी के भिन्न मत देखकर महर्षि शौनक ने उसमें सामंजस्य की भावना से संबोधित करते हुए यह सुझाया कि महाराज सूतजी सर्वश्रेष्ठ पौराणिक प्रवक्ता हैं। ये श्री लोमहर्षण के सुपुत्र और महर्षि वेदव्यास के शिष्य हैं। अतः यदि हम सब वास्तव में अपनी समस्या का समाधान चाहते हैं तो सिद्धारम में विष्णुभक्ति में लीन सूतजी के समक्ष चलना होगा।

सम्मेलन में उपस्थित सभी ऋषियों ने शौनक मुनि के प्रस्ताव को स्वीकार कर सिद्धाश्रम की ओर प्रस्थान किया। सूतजी ने सभी ऋषियों का यथोचित स्वागत सत्कार किया और विश्राम के पश्चात् उनसे आने का प्रयोजन पूछा। जिज्ञासु मुनियों ने अपना मंतव्य स्पष्ट करते हुए कहा कि हे प्रभु !

### **नारद पुराण या नारदीय पुराण :**

हिन्दू शास्त्र में कुल मिलाकर अद्वारह पुराण हैं जिसमें से नारद पुराण का क्रम छठवां है। इस पुराण में पहले 25000 श्लोक थे लेकिन बाद में अभी इसमें मात्र 18,110 श्लोक ही उपलब्ध हैं और अन्य श्लोक लुप्त हो चुके हैं। इस पुराण में व्रत का महत्व, तीर्थ गमन का महत्व जैसे संदर्भ में चर्चा की गयी है। नारदीय पुराण का समय तकरीबन 12 वीं सदी के आसपास का होगा।

### **'नारदीय पुराण' को दो भागों में विभक्त किया गया है-**

- पूर्व भाग
- उत्तर भाग

इस पुराण के पहले यानी पूर्व भाग में एक सौ पच्चीस अध्याय हैं जब की और दूसरे यानी उत्तर भाग में बयासी अध्याय मिलते हैं। नारदीय पूरण में शुरुआत में सभी अद्वारह पुराणों की अनुक्रमणिका दी गई है इसलिए इसका महत्व अधिक है।

'नारद पुराण' एक वैष्णव पुराण है। इस पुराण के सन्दर्भ में यह कहा जाता है कि इसका मात्र श्रवण करने से पाप मुक्त हो जाते हैं। जिस भी व्यक्ति को ब्रह्महत्या का दोष है, अगर वह मदिरा अथवा मांस भक्षण करता है, पर स्त्री में लिप्त रहता हो, चोरी करता है ये सब पाप से मुक्त करता है। यह पुराण मुख्यत्व विषय 'विष्णु भक्ति' पर आधारित है। नारद जी विष्णु के परम भक्त हैं।

'नारद पुराण' के प्रारम्भ भाग में ऋषि का गण सूत जी से कुछ प्रश्न पूछते हैं जैसे की-

- ✓ भगवान विष्णु को प्रसन्न करने का उपाय क्या है?
- ✓ जीवों को मुक्ति कैसे मिल सकती है?
- ✓ भगवान की भक्ति के प्रकार कैसे हैं और इनसे क्या लाभ होता है?
- ✓ अतिथियों का स्वागत कैसे करें?
- ✓ आश्रमों और वर्णों का स्वरूप क्या है?

सूत जी के द्वारा उपर्युक्त प्रश्न के सन्दर्भ में उत्तर दिया की विष्णु जी को प्रसन्न करने का सर्वोत्तम साधन श्रद्धा, भक्ति और सदाचरण का पालन करना है। जो भी जिव निष्काम भाव से भक्ति करता है और अपनी सभी इन्द्रियों को संयमित रखता वही परमपिता इश्वर का सानिध्य प्राप्त करता है। भारत में अतिथि को देवता के समान माना गया है। अतिथि को देवता समज कर ही उनका आदर सत्कार करना चाहिए। चार वर्णों के सन्दर्भ में नारदीय पुराण में ब्राह्मण को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

ब्राह्मण को जब भी भेंट करे तब उनसे नमन करना चाहिए। क्षत्रिय के द्वारा ब्राह्मणों की रक्षा और वैश्य के द्वारा भरण-पोषण और उनकी इच्छाओं की पूर्ति करनी चाहिए। कुछ कार्यों में ब्राह्मणों को छूट और शूद्रों को दण्ड देने की बात है।

इस सन्दर्भ से यह कहा जा सकता है की नारदीय पुराण में ब्राह्मण का पक्ष अधिक लिया जाता है, क्षत्रिय और वैश्य के प्रति का दृष्टिकोण कुछ हद तक स्वार्थी है और शूद्र के प्रति व्यवहार कठोर दिखने

को मिलता है।सागर के वंश में भगीरथ हुए और उन्ही के द्वारा गंगा का पृथ्वी पर जो भी अवतरण हुआ इन सारी बातों का वर्णन भी मिलाता है।

### पूर्व भाग संपादित करें

नारदीय पुराण में ब्रह्मचर्य में किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए और किन बातों का पालन करना चाहिए तथा गृहस्थाश्रम वालों को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए उसका निर्देश भी दिया गया है। पूर्व भाग में ज्ञान प्राप्ति के संदर्भ में विविध पद्धतियों तथा उनके अंग का वर्णन है। ऐतिहासिक कथाओं, धार्मिक अनुष्ठान, एकादशी व्रत माहात्म्य, धर्म का स्वरूप, बारह महीनों की व्रत-तिथियों के साथ जुड़ी कथाएं, मन्त्र विज्ञान, भक्ति का महत्त्व दर्शाने वाली कथाएं, गंगा माहात्म्य तथा ब्रह्मा के मानस पुत्रों का नारद से संवाद का विस्तृत, अलौकिक आख्यान इसमें प्राप्त होता है।

### उत्तर भाग संपादित करें

उत्तर भाग में महर्षि वसिष्ठ और ऋषि मान्धाता के बारे में विस्तृत माहिती प्राप्त होती है। इस भाग में वेदों के छह अंगों का विश्लेषण है। ये अंग हैं- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। 'नारद पुराण' में भगवान् विष्णु की पूजा के साथ-साथ भगवान् राम की पूजा का भी विधान प्राप्त होता है। साथ ही हनुमान, कृष्ण, काली और महेश की पूजा के मन्त्र भी दिए गए हैं। किन्तु प्रमुख तौर पर विष्णु का महत्त्व अधिक बताया है। अन्त में गोहत्या और देव निन्दा को पाप माना गया है।

### शिक्षा

शिक्षा के अंतर्गत मुख्य रूप से स्वर, वर्ण आदि के उच्चारण की विधि का विवेचन है। मन्त्रों की तान, राग, स्वर, ग्राह्य और मूर्च्छता आदि के लक्षण, मन्त्रों के ऋषि, छंद एवं देवताओं का परिचय तथा गणेश पूजा का विधान इसमें बताया जाता है।

## कल्प

कल्प में हवन एवं यज्ञादि अनुष्ठानों के सम्बंध में चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त चौदह मन्वन्तर का एक काल या ४ लाख ३२ हजार वर्ष होते हैं। यह ब्रह्मा का एक दिन कहलाता है। अर्थात् काल गणना का उल्लेख तथा विवेचन भी किया जाता है।

## व्याकरण

व्याकरण में शब्दों के रूप तथा उनकी सिद्धि आदि का पूरा विवेचन किया गया है।

## निरुक्त

इसमें शब्दों के निर्वाचन पर विचार किया जाता है। शब्दों के रूढ़ यौगिक और योगारूढ़ स्वरूप को इसमें समझाया गया है।

## ज्योतिष

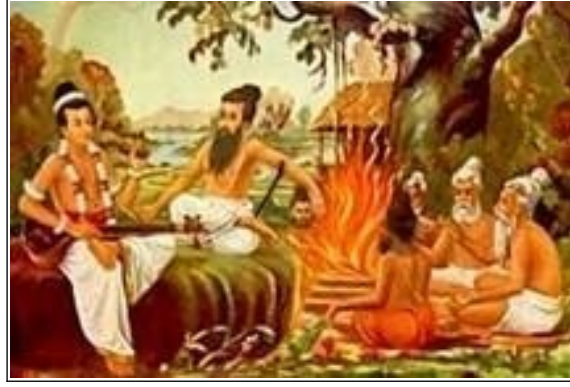
ज्योतिष के अन्तर्गत गणित अर्थात् सिद्धान्त भाग, जातक अर्थात् होरा स्कंध अथवा ग्रह-नक्षत्रों का फल, ग्रहों की गति, सूर्य संक्रमण आदि विषयों का ज्ञान आता है।

## छंद

छंद के अन्तर्गत वैदिक और लौकिक छंदों के लक्षणों आदि का वर्णन किया जाता है। इन छन्दों को वेदों का चरण कहा गया है, क्योंकि इनके बिना वेदों की गति नहीं है। छंदों के बिना वेदों की ऋचाओं का सस्वर पाठ नहीं हो सकता।

इसीलिए वेदों को 'छान्दस' भी कहा जाता है। वैदिक छन्दों में गायत्री, शम्बरी और अतिशम्बरी आदि भेद होते हैं, जबकि लौकिक छन्दों में 'मात्रिक' और 'वार्णिक' भेद हैं। भारतीय गुरुकुलों अथवा आश्रमों में शिष्यों को चौदह विद्याएं सिखाई जाती थीं- चार वेद, छह वेदांग, पुराण, इतिहास, न्याय और धर्म शास्त्र।

## सामग्री संपादित करें



अतिथि को देवता के समान माना गया है। अतिथि का स्वागत देवार्चन समझकर ही करना चाहिए। वर्णों और आश्रमों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए यह पुराण ब्राह्मण को चारों वर्णों में सर्वश्रेष्ठ मानता है। उनसे भेंट होने पर सदैव उनका नमन करना चाहिए। क्षत्रिय का कार्य ब्राह्मणों की रक्षा करना है तथा वैश्य का कार्य ब्राह्मणों का भरण-पोषण और उनकी इच्छाओं की पूर्ति करना है।

दण्ड-विधान, विवाह तथा अन्य सभी कर्मकाण्डों में ब्राह्मणों को छूट और शूद्रों को कठोर दण्ड देने की बात कही गई है। आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत ब्रह्मचर्य का कठोरता से पालन करने तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वालों को अन्य तीनों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास) में विचरण करने वालों का ध्यान रखने की बात कही गई है।



इस पुराण में गंगावतरण का प्रसंग और गंगा के किनारे स्थित तीर्थों का महत्त्व विस्तार से वर्णित किया गया है। सूर्यवंशी राजा बाहु का पुत्र सगर था। विमाता द्वारा विष दिए जाने पर ही उसका

नाम 'सगर' पड़ा था। सगर द्वारा शक और यवन जातियों से युद्ध का वर्णन भी इस पुराण में मिलता है। सगर वंश में ही भगीरथ हुए थे। उनके प्रयास से गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर आई थीं।

इसीलिए गंगा को 'भागीरथी' भी कहते हैं। पुराण में विष्णु की पूजा के साथ-साथ राम की पूजा का भी विधान प्राप्त होता है। हनुमान और कृष्णोपासना की विधियां भी बताई गई हैं। काली और शिव की पूजा के मन्त्र भी दिए गए हैं। किन्तु प्रमुख रूप से यह वैष्णव पुराण ही है। इस पुराण के अन्त में गोहत्या और देव निन्दा को जघन्य पाप मानते हुए कहा गया है कि 'नारद पुराण' का पाठ ऐसे लोगों के सम्मुख कदापि नहीं करना चाहिए।

### नारदपुराण में गणित संपादित करें

नारद पुराण में छः वेदांगों को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है

शिक्षा -- अध्याय ५०

कल्प -- अध्याय ५१

व्याकरण -- अध्याय ५२

निरुक्त -- अध्याय ५३

ज्योतिष -- अध्याय ५४, ५५, ५६

छन्द -- अध्याय ५७

ज्योतिष के अन्तर्गत सामग्री का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार किया गया है-

अध्याय ५४ - गणित

१ से १२कख - परिचय

१२गघ से ६०कख - गणित

६०गघ से १८७ - गणितीय खगोलिकी

अध्याय ५५ - जातक

अध्याय ५६ - संहिता

### निम्नलिखित श्लोक को देखिये-

समांकघातो वर्गः स्यात् तमेवाहुः कृतिं बुधाः।

अन्त्यात्तु विषमात्त्यक्त्वा कृतिं मूलं न्यसेत्पृथक् ॥१६॥

द्विगुणेनामुना भक्ते फलं मूले न्यसेत् क्रमात् ।

तत्कृतिं च त्यजेद्विप्र मूलेन विभजेत् पुनः ॥१७॥

एवं मुहुर्वर्गमूलं जायते च मुनीश्वर।

दो समान अंकों के गुणनफल को वर्ग कहा गया है, विद्वान् पुरुष उसी को कृति कहते हैं। वर्गमूल जानने के लिये दाहिने अंक से लेकर बायें अंक तक अर्थात् आदि से अन्त तक विषम और सम का चिह्न कर देना चाहिये। खड़ी रेखा को विषम का चिह्न और पड़ी रेखा को सम का चिह्न माना गया है। अन्तिम विषम में जितने वर्ग घट सकें उतने घटा देना चाहिये। उस वर्ग का मूल लेना और उसे पृथक् रख देना चाहिये ॥१६॥ फिर द्विगुणित मूल सम अंक में भाग दें और जो लब्धि आवे उसका वर्ग विषम में घटा दें, फिर उसे दूना करके पंक्ति में रख दें। मुनीश्वर! इस प्रकार बार-

बार करने से पंक्ति का आधा वर्गमूल होता है ॥१७ . १ / २॥

### नारद मुनि कौन हैं ? नारद मुनि किसके पुत्र हैं :

- जन्म कथा
- देवर्षि
- नारद जी के ग्रंथ
- विष्णु के अनन्य भक्त

नारद मुनि हिन्दू शास्त्रों के अनुसार ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक माने गये हैं। ये भगवान विष्णु के अनन्य भक्तों में से एक हैं। ये स्वयं वैष्णव हैं और वैष्णवों के परमाचार्य तथा मार्गदर्शक हैं। ये

प्रत्येक युग में भगवान की भक्ति और उनकी महिमा का विस्तार करते हुए लोक-कल्याण के लिए सर्वदा सर्वत्र विचरण किया करते हैं। भक्ति तथा संकीर्तन के ये आद्य-आचार्य हैं।

इनकी वीणा भगवन जप 'महती' के नाम से विख्यात है। उससे 'नारायण-नारायण' की ध्वनि निकलती रहती है। इनकी गति अव्याहत है। ये ब्रह्म-मुहूर्त में सभी जीवों की गति देखते हैं और अजर-अमर हैं। भगवद-भक्ति की स्थापना तथा प्रचार के लिए ही इनका आविर्भाव हुआ है।

### जन्म कथा

श्रीकृष्ण देवर्षियों में नारद को अपनी विभूति बताते हैं। देवर्षि नारद के जन्म के विषय में निम्न कथा प्रचलित है पूर्व कल्प में नारद 'उपबर्हण' नाम के गंधर्व थे। उन्हें अपने रूप पर अभिमान था। एक बार जब ब्रह्मा की सेवा में अप्सराएँ और गंधर्व गीत और नृत्य से जगत्स्रष्टा की आराधना कर रहे थे, उपबर्हण स्त्रियों के साथ श्रृंगार भाव से वहाँ आया। उपबर्हण का यह अशिष्ट आचरण देख कर ब्रह्मा क्रुपित हो गये और उन्होंने उसे 'शूद्र योनि' में जन्म लेने का शाप दे दिया।

शाप के फलस्वरूप वह 'शूद्रा दासी' का पुत्र हुआ। माता पुत्र साधु संतों की निष्ठा के साथ सेवा करते थे। पाँच वर्ष का बालक संतों के पात्र में बचा हुआ झूठा अन्न खाता था, जिससे उसके हृदय के सभी पाप धुल गये। बालक की सेवा से प्रसन्न होकर साधुओं ने उसे नाम जाप और ध्यान का उपदेश दिया। शूद्रा दासी की सर्पदंश से मृत्यु हो गयी। अब नारद इस संसार में अकेले रह गये। उस समय इनकी अवस्था मात्र पाँच वर्ष की थी। माता के वियोग को भी भगवान का परम अनुग्रह मानकर ये अनाथों के नाथ दीनानाथ का भजन करने के लिये चल पड़े।

एक दिन वह बालक एक पीपल वृक्ष के नीचे ध्यान लगा कर बैठा था कि उसके हृदय में भगवान की एक झलक विद्युत् रेखा की भाँति दिखायी दी और तत्काल अदृश्य हो गयी। उसके मन में भगवान के दर्शन की व्याकुलता बढ़ गई, जिसे देखकर आकाशवाणी हुई- "हे दासीपुत्र! अब इस जन्म में फिर तुम्हें मेरा दर्शन नहीं होगा।



अगले जन्म में तुम मेरे पार्षद रूप में मुझे पुनः प्राप्त करोगे।" समय बीतने पर बालक का शरीर छूट गया और कल्प के अंत में वह ब्रह्म में लीन हो गया। समय आने पर नारद जी का पांचभौतिक शरीर छूट गया और कल्प के अन्त में ये ब्रह्मा जी के मानस पुत्र के रूप में अवतीर्ण हुए।

## देवर्षि



देवर्षि नारद वेद व्यास, बाल्मीकि तथा महाज्ञानी शुकदेव आदि के गुरु हैं। 'श्रीमद्भागवत', जो भक्ति, ज्ञान एवं वैराग्य का परमोपदेशक ग्रंथ-रत्न है तथा रामायण, जो मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के पावन, आदर्श चरित्र से परिपूर्ण है, देवर्षि नारदजी की कृपा से ही हमें प्राप्त हो सके हैं। इन्होंने ही प्रह्लाद, ध्रुव, राजा अम्बरीष आदि महान भक्तों को भक्ति मार्ग में प्रवृत्त किया।

ये भागवत धर्म के परम-गूढ़ रहस्य को जानने वाले- ब्रह्मा, शंकर, सनत्कुमार, महर्षि कपिल, स्वयंभुव मनु आदि बारह आचार्यों में अन्यतम हैं। देवर्षि नारद द्वारा विरचित 'भक्तिसूत्र' बहुत महत्त्वपूर्ण है।

नारदजी को अपनी विभूति बताते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण श्रीमद्भागवत गीता के दशम अध्याय में कहते हैं-

## अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः

नारद जी के ग्रंथ

नारद पांचरात्र

नारद के भक्तिसूत्र

नारद महापुराण

बृहन्नारदीय उपपुराण-संहिता-(स्मृतिग्रंथ)

नारद-परिव्राज कोपनिषद

नारदीय-शिक्षा के साथ ही अनेक स्तोत्र भी उपलब्ध होते हैं।

## विष्णु के अनन्य भक्त



देवर्षि नारद भगवान के भक्तों में सर्वश्रेष्ठ हैं। ये भगवान की भक्ति और माहात्म्य के विस्तार के लिये अपनी वीणा की मधुर तान पर भगवद्गुणों का गान करते हुए निरन्तर विचरण किया करते हैं। इन्हें भगवान का मन कहा गया है।

इनके द्वारा प्रणीत 'भक्तिसूत्र' में भक्ति की बड़ी ही सुन्दर व्याख्या है। अब भी ये अप्रत्यक्ष रूप से भक्तों की सहायता करते रहते हैं। भक्त प्रह्लाद, भक्त अम्बरीष, ध्रुव आदि भक्तों को उपदेश देकर इन्होंने ही भक्तिमार्ग में प्रवृत्त किया। इनकी समस्त लोकों में अबाधित गति है। इनका मंगलमय जीवन संसार के मंगल के लिये ही है।

आप सर्वज्ञानी हैं कृपया हमारी जिज्ञासा शांत करें :

1. त्रिलोकीनाथ और संसार के रचना करने वाले,पालन करने वाले और प्रलयकारी भगवान् विष्णु को प्रसन्न करने के लिए मनुष्य को क्या उपाय करने चाहिए ?
2. मनुष्य को सांसारिक आवागमन से मुक्ति के लिए क्या उपाय करने चाहिए ?
3. ईश्वर भक्ति से क्या प्रभाव पड़ता है तथा ईश्वरभक्तों का स्वरूप कैसा होता है?
4. अतिथियों का स्वागत किस प्रकार करना चाहिए ?
5. आश्रम तथा वर्ण-व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप क्या है ?

तत्त्वज्ञानी सूतजी ने बड़ी शांति से जिज्ञासुओं की प्रश्नावली सुनकर इन सभी शकाओं का निराकरण करने के लिए नारद पुराण सुनाने का उपक्रम किया। सूतजी ने बताया कि वेदाशास्त्रसम्मत यह पुराण सभी पापों का नाश करने वाला, अनिष्ट दूर करने वाला, दुःस्वप्न और चिन्ता का निराकरण करने वाला, भोग और मोक्ष प्रदान करने वाला है। यह धर्म, अर्थ काम मोक्ष का हेतुरूप है। यह पुराण आख्यान इतना अधिक प्रभावकारी है कि शुद्ध मन से इसका श्रवण करने से ब्रह्महत्या, मदिरापान गुरुपत्नी-रमण जैसे महापातकों और मांस भक्षण वैश्यागमन जैसे उपपातकों से भ्रष्ट से भ्रष्ट व्यक्ति भी पापमुक्त हो जाता है।

ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा के दिन मूलनक्षत्र में मथुरा में स्नान करके विधिवत् व्रत-उपवास करके भगवान् कृष्ण की पूजा उपासना करते हुए श्री नारद पुराण का श्रवण करें तो भक्ति जन्म-जन्मान्तरों के पाप से मुक्त हो जाता है। माया के जाल से मुक्त होकर निरंजन हो जाता है। भगवान् विष्णु के चरणों में वृत्ति रखने वाला संसार के प्रति अनासक्त होकर फलस्वरूप जीव मुक्ति को प्राप्त करता हुआ वैकुंठ वासी हो जाता है।

सूतजी ने स्पष्ट करते हुए कहा कि यह पुराण परम गोपनीय है। यह केवल श्रद्धालु एवं निष्ठानवान् भक्तों के लिए ही प्रयोग योग्य है। इसीलिए असत् कर्मों में लिप्त, ब्राह्मणद्रोही, ढोंगी दंभी

छपी-कपटी को भूलकर भी इसका श्रवण नहीं करना चाहिए। कहा गया है कि भगवान् भक्ति से प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिए इस नारद पुराण में श्री विष्णु भगवान् की लीलाओं और महिमा का बड़ा ही मनोरम वर्णन है जिसके सुनने से भक्त सभी राग-विराग, द्वेषभाव से मुक्त विष्णु के अनुराग में उन्हीं का होकर रह जाता है।

यह नारद पुराण स्वयं पवित्र है इसलिए वाचन किसी पवित्र स्थान पर होना चाहिए। जिसके लिए कोई भी मंदिर कोई तीर्थ अथवा एकांत, शांत-स्थान और वाचक स्वयं शुद्ध पवित्र भाव वाला, जन्म से ब्राह्मण विद्वान् और आचारवान होना चाहिए। श्रोता को एकाग्रचित होकर इसका श्रवण करना चाहिए। यह आवश्यक है कि श्री नारद पुराण का श्रवण शुद्ध मन से, निःस्वार्थ भाव और बिना किसी प्रदर्शन के करना चाहिए।

यदि कोई व्यक्ति मूर्खतापूर्वक या दंभ में, शुद्ध भावना के अभाव में केवल, प्रदर्शन के लिए नारद पुराण सुनता है तो ऐसा व्यक्ति अनन्त काल तक घोर नारकीय यातनायें सहता है अर्थात् शुद्ध चित्तवृत्ति से ही उसका पारायण लाभप्रद है। वेद निन्दा करने वालों के समान ही पुराण निन्दा करने वाले भी नास्तिक ही होते हैं। भगवान् वेद व्यास ने यह पुराणआख्यान जीवों के कल्याण के लिए ही रचा है। इसलिए इसका श्रवणआराधन चित्तवृत्तियों को केन्द्रित करके पूर्ण श्रद्धाभक्ति से करना चाहिए।

मनुष्य के जीवन की सार्थकता पुरुषार्थ चतुष्टाय को प्राप्त करने में ही है और इसका सरल उपाय सकल विश्व के स्वामी सर्वव्यापी, अनित्य, अमर और सर्वान्तरयामी श्री विष्णु में अटूट भक्ति है। पुराणों का श्रवण इस भक्ति का सरलतम साधन है। इन कथाओं के श्रवण भक्त का भगवान् में मन लग जाता है तथा जन्म-मरण के झंझटों से वह निवृत्ति को प्राप्त हो जाता है। यह कहते हुए महर्षि सूतजी ने ऋषियों से कहा कि संपूर्ण वेदों और शास्त्रों के गूढ़ तत्त्वों को प्रकाशित करने वाला पुराणों में विशिष्ट यह नारद पुराण मैं आपको सुनाता हूँ। मुझे विश्वास है-यदि शुद्ध मन से आपने इसका श्रवण किया तो आपकी सभी जिज्ञासाओं और शंकाओं का निराकरण हो जायेगा।

पुराण' एक वैष्णव पुराण है। इस पुराण के विषय में कहा जाता है कि इसका श्रवण करने से पापी व्यक्ति भी पाप मुक्त हो जाते हैं। पापियों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि जो व्यक्ति ब्रह्महत्या का दोषी है, मदिरापान करता है, मांस भक्षण करता है,वेश्यागमन करता है,लहसुन-प्याज खाता है तथा चोरी करता है वह पापी है। इस पुराण का प्रतिपाद्य विषय 'विष्णु भक्ति' है। नारद जी विष्णु के परम भक्त हैं। नारद मुनि 'नारद पुराण' के प्रारम्भ में ऋषिगण सूत जी से पांच प्रश्न पूछते हैं- भगवान विष्णु को प्रसन्न करने का सरल उपाय क्या है? मनुष्यों को मोक्ष किस प्रकार प्राप्त हो सकता है? भगवान के भक्तों का स्वरूप कैसा हो और भक्ति से क्या लाभ है? अतिथियों का स्वागत-सत्कार कैसे करें? वर्णों और आश्रमों का वास्तविक स्वरूप क्या है? लक्ष्मी सूत जी ने उपर्युक्त प्रश्नों का सीधा उत्तर नहीं दिया।

अपितु सनत्कुमारों के माध्यम से बताया कि भगवान विष्णु ने अपने दक्षिण भाग से ब्रह्मा और वाम भाग से शिव को प्रकट किया था। लक्ष्मी, उमा, सरस्वती देवी और दुर्गा आदि विष्णु की ही शक्तियां हैं। श्री विष्णु जी को प्रसन्न करने का सर्वोत्तम साधन श्रद्धा,भक्ति और सदाचरण का पालन करना है।

जो भक्त निष्काम भाव से ईश्वर की भक्ति करता है और अपनी समस्त इन्द्रियों को मन द्वारा संयमित रखता है वही ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त कर सकता है। यदि ऐसा भक्ति से ईश्वर का संयोग प्राप्त हो जाए तो उससे बड़ा लाभ और क्या हो सकता है? भारत में अतिथि को देवता के समान माना गया है। अतिथि का स्वागत देवार्चन समझकर ही करना चाहिए वर्णों और आश्रमों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए यह पुराण ब्राह्मण को चारों वर्णों में सर्वश्रेष्ठ मानता है।

उनसे भेंट होने पर सदैव उनका नमन करना चाहिए। क्षत्रिय का कार्य ब्राह्मणों की रक्षा करना है तथा वैश्य का कार्य ब्राह्मणों का भरण-पोषण और उनकी इच्छाओं की पूर्ति करना है। दण्ड-विधान, विवाह तथा अन्य सभी कर्मकाण्डों में ब्राह्मणों को छूट और शूद्रों को कठोर दण्ड देने की बात कही गई है।

भगवती सरस्वती आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत ब्रह्मचर्य का कठोरता से पालन करने तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वालों को अन्य तीनों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्न्यास) में विचरण करने वालों का ध्यान रखने की बात कही गई है।

इस प्रकार वर्णाश्रम व्यवस्था में यह पुराण ब्राह्मणों का ही सर्वाधिक पक्ष लेता दिखाई पड़ता है। क्षत्रिय और वैश्यों के प्रति इसका स्वार्थी दृष्टिकोण है जबकि शूद्रों के प्रति कठोरता का व्यवहार प्रतिपादित है।

**कौन हैं देवर्षि नारद? और क्या कहता है उनका पुराण यानि 'नारद पुराण' कलयुग के बारे में :**



पौराणिक शास्त्रों में लिखी महामारी की बात खोज रहे हैं। वहीं आज हम आपको देवर्षि ( देवऋषि - देवों के ऋषि ) नारद और उनके द्वारा रचित पुराण यानि नारद पुराण से जुड़े कुछ खास रहस्यों के बारे में बताने जा रहे हैं। जिसमें न केवल उन्होंने पाप पुण्य से जुड़ी बातों के बारे में बताया है, बल्कि कलयुग से जुड़ी कुछ ऐसी बातों के बारे में तक जिक्र किया है, जिसके बारे में आज बहुत ही कम लोग जानते हैं।

तो चलिये सबसे पहले बात करते हैं देवऋषि नारद की।।।जिनके बारे में मान्यता है कि वैदिक पुराणों के अनुसार नारद मुनि देवताओं के दूत और सूचनाओं का स्रोत हैं। वहीं ये भी माना जाता है कि नारद जी तीनों लोकों, आकाश, स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल या जहां चाहे विचरण कर सकते हैं।

यही नहीं उन्हें धरती के पहले पत्रकार की उपाधि भी दी गई है। कहते हैं कि सूचनाओं को इधर-उधर से पहुंचाने के लिए नारद मुनि पूरे ब्रह्मांड में घूमते रहते हैं। हालांकि कई बार उनकी सूचनाओं से खलबली भी मची है, लेकिन उनसे हमेशा ब्रह्मांड का भला ही हुआ है। नारद संवाद का सेतु जोड़ने का कार्य करते हैं तोड़ने का नहीं।

नारद जी को बुद्धि और अथाह ज्ञान प्राप्त होने की वजह से सुर, असुर, गंधर्व और मानव आदि सभी बहुत सम्मान देते हैं। देवर्षि नारद को अमरत्व का वरदान प्राप्त है। वह तीनों लोकों में कहीं भी कभी भी किसी भी समय प्रकट हो सकते हैं।



**शास्त्रों के अनुसार सबको जलदान, ज्ञानदान देने में निपुण हैं 'नारद'**

"नारद मुनि के नाम का शाब्दिक अर्थ जाना जाए तो 'नार' शब्द का अर्थ है जल। वह सबको जलदान, ज्ञानदान और तर्पण करने में निपुण होने के कारण ही नारद कहलाए। शास्त्रों में अथर्ववेद में भी नारद नाम के ऋषि का उल्लेख मिलता है।

प्रसिद्ध मैत्रायणई संहिता में भी नारद को आचार्य के रूप में सम्मानित किया गया है। अनेक पुराणों में नारद जी का वर्णन बृहस्पति जी के शिष्य के रूप में भी मिलता है।

नारद जी हमेशा वीणा लिए रहते हैं। शास्त्रों के अनुसार 'वीणा' का बजना शुभता का प्रतीक है इसलिए नारद जयंती पर 'वीणा' का दान विभिन्न प्रकार के दान से श्रेष्ठ माना गया है।

हाथ में वीणा लेकर पृथ्वी से लेकर आकाश लोक, स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक से लेकर पाताल लोक तक हर प्रकार की सूचनाओं के आदान-प्रदान करने के कारण, जब भी वह किसी लोक में पहुंचते हैं तो सभी को इस बात का इंतजार रहता है कि वह जिस लोक से आए हैं वहां की कोई न कोई सूचना अवश्य लाए होंगे। ब्रह्मांड की बेहतरी के लिए वह विश्वभर में भ्रमण करते रहे हैं।"

### **क्या कहता है देवर्षि द्वारा रचित नारद पुराण ?**

"अतिथि को देवता के समान माना गया है। अतिथि का स्वागत देवार्चन समझकर ही करना चाहिए। वर्णों और आश्रमों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए यह पुराण ब्राह्मण को चारों वर्णों में सर्वश्रेष्ठ मानता है। उनसे भेंट होने पर सदैव उनका नमन करना चाहिए।

क्षत्रिय का कार्य ब्राह्मणों की रक्षा करना है और वैश्य का कार्य ब्राह्मणों का भरण-पोषण और उनकी इच्छाओं की पूर्ति करना है। आश्रम व्यवस्था के अंतर्गत ब्रह्मचर्य का कठोरता से पालन करने तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वालों को अन्य तीनों आश्रमों (ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास) में विचरण करने वालों का ध्यान रखने की बात कही गई है।"

### **नारद पुराण के अनुसार- 'पाप, पापी और ब्रह्मचर्य**

पाप या गुनाह मनुष्य द्वारा किए गए उन कार्यों को कहा जाता है, जो किसी भी धर्म में अस्वीकार्य माने जाते हैं। वे सभी कार्य, जो अध्यात्मिक और सामाजिक मूल्यों का हास करते हों, या आर्थिक एवं प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करते हों, पाप या गुनाह की श्रेणी में आते हैं। वह व्यक्ति, जो पाप करता है, पापी या गुनहगार कहलाता है।"



पापियों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि जो व्यक्ति ब्रह्महत्या का दोषी है, मदिरापान करता है, मांस भक्षण करता है, वेश्यागमन करता है, तामसिक भोजन खाता है तथा चोरी करता है, वह पापी है। नारद पुराण का प्रतिपाद्य विषय विष्णुभक्ति है।

ब्रह्मचर्य योग के आधारभूत स्तंभों में से एक है। ये वैदिक वर्णाश्रम का पहला आश्रम भी है, जिसके अनुसार ये 0-25 वर्ष तक की आयु का होता है और जिस आश्रम का पालन करते हुए विद्यार्थियों को भावी जीवन के लिये शिक्षा ग्रहण करनी होती है।'

अपना भला चाहने वाले को बाएं हाथ से जल ग्रहण नहीं करना चाहिए।

**नारद पुराण के अनुसार- अपने पास जो है उसी से संतुष्ट हों**



जो व्यक्ति संतोष पूर्वक अपने भोजन और धन से संतुष्ट होता है उसके घर में लक्ष्मी का सदा निवास रहता है, उसकी प्रगति निश्चित होती है। अतः अपने पास जो हो उसी से मतलब रखना चाहिए, दूसरों के अन्न में लोभ नहीं रखना चाहिए।'

कभी भी दिन में नहीं सोना चाहिए। जो मनुष्य दिन में सोता है, उसे धन की कमी होती है। वो व्यक्ति बीमार रहता है और उसकी कम आयु में मृत्यु भी हो जाती है।